श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

Answer Sheet

2025-Feb

ऐनरोलमेन्ट नंबर 9 शहर _____

विद्यार्थी का नाम _____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	खजाना
(२)	विश्व
(३)	अचल
(४)	सुपति
(५)	तीर्थ
(६)	क्षेत्रद्वार
(७)	मार्गदर्शिनि
(८)	द्रव्य
(९)	अहोरात्री
(१०)	जो
(११)	आत्मसात
(१२)	लोकाविज्ञान
(१३)	देह
(१४)	बैल
(१५)	निंदा
(१६)	सिद्ध
(१७)	चंडकौशिक
(१८)	रोग
(१९)	भाषा शुद्धि
(२०)	सारभूत

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	केवलज्ञानी भगवंत
(२)	आलंभिका नगरी
(३)	अभयकुमार
(४)	नवकार महामंत्र
(५)	नपुंसक लिंग
(६)	सिद्ध
(७)	शुक्ल पक्ष
(८)	मरण
(९)	आधी-आधी
(१०)	सिंह
(११)	देव लोक
(१२)	मृगावती
(१३)	सिद्धशिला
(१४)	नरक
(१५)	गुण

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	दर्शन
(२)	प्राण
(३)	गति
(४)	आज्ञा दिजिए

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	5	(६)	3
(२)	7	(७)	4
(३)	9	(८)	1
(४)	8	(९)	6
(५)	10	(१०)	2

(५)	संसि संसि
(६)	नव तत्व
(७)	अपराध को
(८)	लोकाकार
(९)	पृथ्वीकाय
(१०)	प्रभुपणा
(११)	यथाख्यात
(१२)	चारित्र
(१३)	जो कुछ
(१४)	विकलेन्द्रिय
(१५)	७-८ भव
(१६)	व्यतित हुआ
(१७)	विद्यमान
(१८)	दो
(१९)	लेश्या
(२०)	भुज परिसर्प

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	108
(२)	6
(३)	10
(४)	17
(५)	33
(६)	21
(७)	3
(८)	62
(९)	45 लाख
(१०)	7

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१)	✓
(२)	×
(३)	×
(४)	✓
(५)	×
(६)	×
(७)	×
(८)	✓
(९)	✓
(१०)	×

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१)	11
(२)	16
(३)	6
(४)	3
(५)	13
(६)	9
(७)	18
(८)	7
(९)	26
(१०)	12

	+		+		+		+		+		+		+		=	

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट आयु बावीस हजार वर्ष है, अपकाय का आयुष्य सात हजार वर्ष है। वायुकाय का आयुष्य तीन हजार वर्ष का है। प्रत्येक वनस्पतिकाय का आयुष्य दश हजार वर्ष का है। और तेउकाय का आयुष्य तीन अहोरात्री का है। यहाँ गाथार्थ में जो उत्कृष्ट स्थिति कही है वह निरुपद्रव्य स्थान में रहे जीवो को जानना। जिस स्थान मे उ-हे आघात, प्रत्याघात के निमित्त न मिलते हो, सामान्यत: मध्यम कक्षा के आयुष्य वाले जीव ही ज्यादा जानना।

२. चंदनबाला प्रभू महावीर स्वामी के मुख्य साध्वीजी थी। मृगावती उनकी शिष्या थी। उपाश्रय मे लौटने को देर हुई तो गुरु चंदनबाला ने टकोर की "तुम्हारी जैसी कुलीन साध्वी जी ने ऐसा विलंब करना योग्य नही है।" तेजी को टोकर काफी होती है। इस न्याय से मृगावती विचार करने लगी "मैं कैसी हूँ? मैंने गुरु भगवंत को संताप पहुँचाया है, उनकी साधना मे अवरोध खड़ा किया है" इसतरह के पश्चाताप की धारा में कर्म मल धोकर आत्मा उज्जवल हो गयी. घाति कर्मो का नाश हुआ और केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

३. सुदेव, सुगुरु, सुधर्म को स्वीकारने की और कुदेव, कुगुरु, कुधर्म को त्यागने की भावना की जाती है। ऐसा करने से ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना सुंदर रूप से हो और उसके लिए ज्ञान, दर्शन चारित्र की विराधना त्यागना ही चाहिए। मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति स्वीकारना चाहिए। मनदंड, वचनदंड, कायदंड त्यागना चाहिए ऐसी भावना व्यक्त हुई है।

४. जिन सिद्ध अल्प और अजिन सिद्ध उनसे असंख्यगुणा है। २) अतीर्थ सिद्ध अल्प, तीर्थ सिद्ध उनसे असंख्यगुना है। ३) गृहस्थ लिंग सिद्ध अल्प उनसे अन्यलिंग सिद्ध संख्यात गुना उनसे स्वलिंग सिद्ध संख्यात गुना है। ४) स्वयंबुद्ध सिद्ध अल्प, इनसे प्रत्येक बुद्ध सिद्ध संख्यात गुना, उनसे बुद्धबोधित सिद्ध संख्यात गुना। ५) अनेक सिद्ध अल्प और एकसिद्ध उनसे संख्यात गुना। इसतरह मोक्ष तत्व जानने योग्य है। जानकर उस दिशा मे प्रयत्न हो और आत्मकल्याण साध सकें ऐसा पुरुषार्थ करने योग्य है।

५. प्रभू वहाँ से शालिशीर्ष गाँव पहुँचे। वहाँ अत्यंत ठंड थी। उस समय प्रभू कायोत्सर्ग मे रहे। तब त्रिपृष्ट वासुदेव के भव मे अपमानित हुई विजयवती नाम की रानी मरकर कई भव घूमकर कटपूतना नामक व्यंतरी हुई थी। उसने तापसी का रूप धारण कर अपना जटा मे से हिम जैसा ठंडा पानी प्रभू के उपर छाँटने लगी। कडकडाती माघ मास की ठंडी उसमे प्रभू को यह शीत उपसर्ग हुआ, फिर भी प्रभू को ध्यान में निश्चल जानकर वह व्यंतरी प्रभु की क्षमा माँगकर नमस्कार कर अपने स्थान चली गयी। ऐसे शीत उपसर्ग को समभाव से सहन करते हुए प्रभू को लोकावधिज्ञान उत्पन्न हुआ।